International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 12, December 2022
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

रामायण का विदेश भ्रमण का प्रभाव

DEVESH CHANDER
RESEARCVH SCHOLAR SUNRISE UNIVERSITY ALWAR

DR. MINESH JAIN
PROFESSOR SUNRISE UNIVERSITY ALWAR

सारांश

भिन्न–भिन्न प्रकार से गिनने पर रामायण तीन सौ से लेकर एक हजार तक की संख्या में विविध रूपों में मिलती हैं। इनमें से संस्कृत में रचित वाल्मीकि रामायण (आर्ष रामायण) सबसे प्राचीन मानी जाती है।विदेशों में भी तिब्बती रामायण, पूर्वी तुर्किस्तानकी खोतानीरामायण, इंडोनेशिया की ककबिनरामायण, जावा का सेरतराम, सैरीराम, रामकेलिंग, पातानीरामकथा, इण्डोचायनाकी रामकेर्ति (रामकीर्ति), खमैररामायण, बर्मा (म्यांम्मार) की यूतोकी रामयागन, थाईलैंड की रामकियेन आदि रामचरित्र का बखूबी बखान करती है। इसके अलावा विद्वानों का ऐसा भी मानना है कि ग्रीस के कवि होमर का प्राचीन काव्य इलियड, रोम के कवि नोनस की कृति डायोनीशिया तथा रामायण की कथा में अद्‌भुत समानता है।विश्व साहित्य में इतने विशाल एवं विस्तृत रूप से विभिन्न देशों में विभिन्न कवियों/लेखकों द्वारा राम के अलावा किसी और चरित्र का इतनी श्रद्धा से वर्णन न किया गया।

मुख्यशब्द–रामायण, विदेश भ्रमण, प्रभाव, रामकीर्ति, विश्व साहित्य

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्रस्तावना

अदौ राम तपोवनादि गमनं हत्वा मृगं कांचनम्।

वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव संभाषणम्।

बालि निग्रहणं समुद्र तरणं लंका पुरी दास्हम्।

पाश्चाद् रावण कुंभकर्ण हननं तद्धि रामायणम्।

साहित्यिक शोध के क्षेत्र में भगवान राम के बारे में आधिकारिक रूप से जानने का मूल स्रोत महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण है। इस गौरव ग्रंथ के कारण वाल्मीकि दुनिया के आदि कवि माने जाते हैं। श्रीराम–कथा केवल वाल्मीकीय रामायण तक सीमित न रही बल्कि मुनि व्यास रचित महाभारत में भी 'रामोपाख्यान' के रूप में आरण्यकपर्व (वन पर्व) में यह कथा वर्णित हुई है। इसके अतिरिक्त 'द्रोण पर्व' तथा 'शांतिपर्व' में रामकथा के सन्दर्भ उपलब्ध हैं।

बौद्ध परम्परा में श्रीराम से संबंधित दशरथ जातक, अनामक जातक तथा दशरथ कथानक नामक तीन जातक कथाएँ उपलब्ध हैं। रामायण से थोड़ा भिन्न होते हुए भी ये ग्रन्थ इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हैं। जैन साहित्य में राम कथा सम्बन्धी कई ग्रंथ लिखे गये, जिनमें मुख्य हैं– विमलसूरि कृत 'पउमचरियं' (प्राकृत), आचार्य रविषेण कृत 'पद्मपुराण' (संस्कृ), स्वयंभू कृत 'पउमचरिउ' (अपभ्रंश), रामचंद्र चरित्र पुराण तथागुणभद्र कृत उत्तर पुराण (संस्कृत)। जैन परम्परा के अनुसार राम का मूल नाम 'पद्म' था।

भारत के बाहर रामायणः–

●नेपाली

● भानुभक्तकृत

रामायण भानुभक्तीय रामायण या सामान्य तौर पर रामायण वाल्मीकीय रामायण का आदिकवि भानुभक्त आचार्य द्वारा अनुदित संस्करण है। यह आचार्य की मृत्यु के बाद 1887 में अपने पूर्ण

रूप में प्रकाशित ह ुआ था। इसे नेपाली में प्रकाशित पहला महाकाव्य माना जाता है और इसीलिए इसमें उपयुक्त लय को भानुभक्तीय लय का नाम दिया गया है। नेपाली भाषा के पहले महाकाव्य निर्माण करनेवाले व्यक्ति के तौर पर परिचित भानुभक्त को इसीलिए नेपाल के आदिकवि की उपाधि दी गई है।

इस किताब के प्रकाशन को नेपाल में हिंदू धर्म के प्रजातंत्रीकरण में उठाया गया पहला कदम माना जाता है क्योंकि इसके माध्यम से आम जनता को अपनी मातृभाषा में हिंदू इतिहास के दो स्तंभों में से एक की पहुँच प्राप्त हुई, जिसकी वजह से धर्म ग्रंथों की शिक्षा और व्याख्या में ब्राह्मण पंडितो ं के नायकत्व पर रोक लगा।दूसरी ओर, कई लोग नेपाल में अन्य भाषाओं के बजाय नेपाली भाषा और साहित्य के नायकत्व स्थापित करवाने में निर्वाहित भूमिका को कारण बताते हुए इस किताब की निंदा करते हैं।, यह किताब और इसके रचयिता को नेपाल के बाहर भी नेपाली समुदायों में उच्च दर्जा दिया जाता है।

जापान की राम कथा

जापान के एक लोकप्रिय कथा संग्रह 'होबुत्सुशू' में संक्षिप्त राम कथा संकलित है। इसकी रचना तैरानो यसुयोरी ने बारहवीं शताब्दी में की थी। रचनाकार ने कथा के अंत में घोषणा की है कि इस कथा का स्रोत चीनी भाषा का ग्रंथ श्छह परिमिता सूत्रश है।२ यह कथा वस्तुतः चीनी भाषा के 'अनामकंजातकम्' पर आधारित है, किंतु इन दोनों में अनेक अंतर भी हैं।

फिलिपींस की राम कथा– महालादिया लावन

इंडोनेशिया और मलयेशिया की तरह फिलिपींस के इस्लामीकरण के बाद वहाँ की राम कथा को नये रुप रंग में प्रस्तुत किया गया। ऐसी भी संभावना है कि इसे बौद्ध और जैनियों की तरह जानबूझ कर विकृत किया गया। डॉ. जॉन आर. फ्रैंसिस्को ने फिलिपींस की मारनव भाषा में संकलित इक विकृत रामकथा की खोज की है जिसका नाम मसलादिया लाबन है। इसकी कथावस्तु पर सीता के स्वयंवर, विवाह, अपहरण, अन्वेषण और उद्धार की छाप स्पष्ट रुप से दृ ष्टिगत होता है।

कंपूचिया की राम कथा– रामकेर्ति

कंपूचिया की राजधानी फ्नाम–पेंह में एक बौद्ध संस्थान है जहाँ ख्मेर लिपि में दो हजार ताल पत्रों पर लिपिबद्ध पांडुलिपियाँ संकलित हैं। इस संकलन में कंपूचिया की रामायण की प्रति भी है। फ्नाम–पेंह बौद्ध संस्थान के तत्कालीन निदेशक एस. कार्पेल्स द्वारा रामकेर्ति के उपलब्ध सोलह सर्गों (१–१० तथा ७६–८०) का प्रकाशन अलग–अलग पुस्तिकाओं में हुआ था। इसकी प्रत्येक पुस्तिका पर रामायण के किसी न किसी आख्यान का चित्र है। कंपूचिया की रामायण को वहाँ के लोग 'रिआमकेर' के नाम से जानते हैं, किंतु साहित्य जगत में यह 'रामकेर्ति' के नाम से विख्यात है।?

रामायण की विश्व यात्रा

श्रीलंका और बर्मा में रामायण कई रूपों में प्रचलित है। लोक गीतों के अतिरिक्त रामलीला की तरह के नाटक भी खेले जाते हैं। बर्मा में बहुत से नाम राम के नाम पर हैं। रामावती नगर तो राम नाम के ऊपर ही स्थापित हुआ था। अमरपुर के एक विहार में राम लक्ष्मण सीता और हनुमान के चित्र आज तक अंकित हैं।

मलयेशिया में रामकथा का प्रचार अभी तक है। वहां मुस्लिम भी अपने नाम के साथ अक्सर राम लक्ष्मण और सीता नाम जोड़ते हैं। यहां रामायण को ''हिकायत सेरीराम'' कहते हैं।

थाईलैंड के पुराने रजवाडों में भरत की भा ंति राम की पादुकाएं लेकर राज्य करने की परंपरा पाई जाती है। वे सभी अपने को रामवंशी मनते थे।यहां ''अजुधिया'' ''लवपुरी'' और ''जनकपुर'' जैसे नाम वाले शहर हैं। यहां पर राम कथा को ''रामकीर्ति'' कहते हैं और मंदिरों में जगह जगह रामकथा के प्रसंग अंकित हैं।

हिन्द चीन के अनाम में कई शिलालेख मिले हैं जिनमें राम का यशोगान है। यहां के निवासियों में ऐसा विश्वास प्रचलित है कि वे वानर कुल से उत्पन्न हैं और श्रीराम नाम के राजा

यहां के सर्वप्रथम शासक थे। रामायण पर आधारित कई नाटक यहां के साहित्य में भी मिलते है।

कम्बोडिया में भी हिन्दू सभ्यता के अन्य अंगों के साथ साथ रामायण का प्रचलन आजतक पाया जाता है। छढी शताब्दी के एक शिलालेख के अनुसार वहां कई स्थानों पररामायण और महाभारत का पाठ होता था।

जावा में रामचंद्र राष्ट्रीय पुरूषोत्तम के रूप में सम्मानित हैं। वहां की सबसे बडी नदी का नाम सरयू है। ''रामायण'' के कई प्रसंगों के आधार पर वहां आज भी रात रात भर कठपुतलियों का नाच होता है। जावा के मंदिरों में वाल्मीकि रामायण के श्लोक जगह जगह अंकित मिलते हैं।

सुमात्रा द्वीप का वाल्मीकि रामायण में 'स्वर्णभूमि' नाम दिया गया है। रामायण यहां के जनजीवन में वैसे ही अनुप्राणित है जैसे भारतवासियों के। बाली द्वीप भी थाईलैंड जावा और सुमात्रा की तरह आर्य संस्कृति का एक दूरस्थ सीमा स्तम्भ है। ''रामायण'' का प्रचार यहां भी घर घर में है।

मैक्सिका और मध्य अमरीकाकी मय सभ्यता और इन्का सभ्यता पर प्राचीन भारतीय संस्कृति की जो छाप मिलती है उसमें रामायण कालीन संस्कारों का प्राचुर्य है। पेरू में राजा अपने को सूर्यवंशी ही नहीं 'कौशल्यासुत राम' वंशज भी मानते हैं। ''रामसीतव'' नाम से आज भी यहा ं ''राम सीता उत्सव'' मनाया जाता है।

लाओस के निवासी स्वयं को भारतवंशी मानते हैं। उनका कहना हैं कि कलिंग युद्ध के बाद उनके पूर्वज इस क्षेत्र में आकर बस गये थे। लाओस की संस्कृति पर भारतीयता की गहरी छाप है। यहाँ रामकथा पर आधारित चार रचनाएँ उपलब्ध है– फ्रलक फ्रलाम (रामजातक), ख्वाय थोरफी, ब्रह्मचक्र और लंका नोई। लाओस की रामकथा का अध्ययन कई विद्वानों ने किया है।

थाईलैंड का रामकथा साहित्य बहुत समृद्ध है। रामकथा पर आधारित निम्नांकित प्रमुख रचनाएँ वहाँ उपलब्ध हैं– (१) तासकिन रामायण, (२) सम्राट राम प्रथम की रामायण, (३) सम्राट राम द्वितीय की रामायण, (४) सम्राट राम चतुर्थ की रामायण (पद्यात्मक), (५) सम्राट रामचतुर्थ की

रामायण (संवादात्मक), (६) सम्राट राम षष्ठ की रामायण (गीति–संवादात्मक)। आधुनिक खोजों के अनुसार बर्मा मे ं रामकथा साहित्य की १६ रचनाओं का पता चला है जिनमें रामवत्थु प्राचीनतम कृति है।

मलयेशिया में रामकथा से संबद्ध चार रचनाएँ उपलब्ध है– (१) हिकायत सेरी राम, (२) सेरी राम, (३) पातानी रामकथा और (४) हिकायत महाराज रावण। फिलिपी ंस की रचना महालादिया लावन का स्वरुप रामकथा से बहुत मिलता–जुलता है, किंतु इसका कथ्य बिल्कुल विकृत है।

चीन में रामकथा बौद्ध जातकों के माध्यम से पहुँची थीं। वहाँ अनामक जातक और दशरथ कथानम का क्रमशरू तीसरी और पाँचवीं शताब्दी में अनुवाद किया गया था। दोनों रचनाओं के चीनी अनुवाद तो उपलब्ध हैं, किंतु जिन रचनाओं का चीनी अनुवाद किया गया था, वे अनुपलब्ध हैं। तिब्बती रामायण की छह पांडुलिपियाँ तुन–हुआननामक स्थल से प्राप्त हुई हैं। इनके अतिरिक्त वहाँ राम कथा पर आधारित दमर–स्टोन तथा संघ श्री विरचित दो अन्य रचनाएँ भी हैं।

एशिया के पश्चिमोत्तर सीमा पर स्थित तुर्किस्तान के पूर्वी भाग को खोतान कहा जाता है। इस क्षेत्र की भाषा खोतानी है। खोतानी रामायण की प्रति पेरिस पांडुलिपि स ंग्रहालय से प्राप्त हुई है। इस पर तिब्बत्ती रामायण का प्रभाव परिलक्षित होता है। चीन के उत्तर–पश्चिम में स्थित मंगोलिया में राम कथा पर आधारित जीवक जातक नामक रचना है। इसके अतिरिक्त वहाँ तीन अन्य रचनाएँ भी हैं जिनमे ं रामचरित का विवरण मिलता है। जापान के एक लोकप्रिय कथा संग्रह होबुत्सुशु में संक्षिप्त रामकथा संकलित है। इसके अतिरिक्त वहाँ अंधमुनिपुत्रवध की कथा भी है। श्री लंका में कुमार दास के द्वारा संस्कृत में जान की हरण की रचना हुई थी। वहाँ सिंहली भाषा में भी एक रचना है, मलयराजकथाव। नेपाल में रामकथा पर आधारित अनेकानेक रचनाएँ जिनमें भानुभक्तकृत रामायण सर्वाधिक लोकप्रिय है।

निष्कर्ष

भारत के इतिहास में राम जैसा विजेता कोई नहीं हुआ। उन्होंने रावण और उसके सहयोगी अनेक राक्षसों का वध कर के न केवल भारत में शांति की स्थापना की बल्कि सुदूर पूर्व और आस्ट्रेलिया तक में सुख और आनंद की एक लहर व्याप्त कर दी। श्री राम अदभुत सामरिक पराक्रम व्यवहार कुशलता और विदेश नीति के स्वामी थे। उन्होंने किसी देश पर अधिकार नहीं किया लेकिन विश्व के अनेकों देशों में उनकी प्रशंसा के विवरण मिलते हैं जिससे पता चलता है कि उनकी लोकप्रियता दूर दूर तक फैली हुई थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- आंजनी 69
- इंद्रनील 62
- इलियड 222, 292
- कुछ डेटा इंटरनेट द्वार लिया गया।
- अग्रवाल, वासुदेवशरण 49, 294
- अट्टालक 213
- अतिथि–सत्कार 9–12